विभागीय हिन्दी पत्रिका

कुरजां

द्वितीय अंक (जून 2025)

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान

ए.जी. कॉलोनी , बजाज नगर, जयपुर 302015

कुरजां परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री रामावतार शर्मा

प्रधान निदेशक

संपादक मंडल

श्री सुरेंद्र कुमार जैन

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

श्री राजेन्द्र प्रसाद मीना

सहायक प्रशासनिक अधिकारी

संपादन सहयोग

सुश्री अदिति शर्मा

यंग प्रोफेशनल

श्री दीपक भारद्वाज

यंग प्रोफेशनल

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है | रचनाओ की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे |

संपादक मंडल

प्रधान निदेशक महोदय का संदेश

श्री रामावतार शर्मा

विगत वर्ष प्रारंभ की गई विभागीय हिन्दी ई - पत्रिका "कुरजां" के दूसरें अंक के प्रकाशन से अत्यंत प्रसन्नता हुई है। यह विगत वर्ष प्रारंभ किए एक नवाचार एवं उसके बाद के सतत प्रयासों का सुखद परिणाम है, जिसमें संस्थान के कार्मिकों द्वारा उनकी रचनाओं के रूप मे सराहनीय योगदान दिया है। हिन्दी ई - पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक को प्राय: सभी कार्यालयों द्वारा बहुत प्रशंसा और सम्मान मिला है। इन सकारात्मक प्रतिक्रियाओं ने हमें नई ऊर्जा और उत्साह प्रदान किया है।

यह संस्थान दैनिक कार्यालयीन क्रिया – कलापों में हिन्दी के प्रयोग के उच्च मानक स्थापित करने का प्रयास करता रहा है। उल्लेखनीय है कि, संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान संस्थान में हिन्दी के प्रयोग को उत्कृष्ट बताया गया तथा "कुरजां" को भी सराहा गया। यह हमारे संस्थान के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और हमें गर्व महसूस कराती है।

आशा है कि हिन्दी ई - पत्रिका "कुरजां" का यह अंक राजभाषा हिन्दी के प्रचार- प्रसार में सहायक सिद्ध होने के साथ-साथ हिन्दी के प्रति एक सकारात्मक सोच को भी विकसित करेगा। पत्रिका के सफल ई प्रकासन हेतु संपादक मंडल एवं सभी रचकारों कों हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

संपादक की कलम से.....

प्रधान निदेशक महोदय की प्रेरणा से विगत वर्ष इस संस्थान द्वारा विभागीय ई - पत्रिका "कुरजां" का प्रकाशन एक नवाचार के रूप में किया गया। यद्यपि समस्त स्टाफ कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के अधिकतम प्रयोग हेतु सदैव तत्परता से प्रयासरत रहता है तथापि "कुरजां" ने अपने विचारों और भावों को हिन्दी में व्यक्त करने का एक सुखद माध्यम उपलब्ध करा दिया है। स्टाफ द्वारा इस नवाचार को पूर्ण सहयोग दिए जाने एवं रुचिपूर्वक भागीदारी निभाने के फलस्वरूप कुरजां का संकलन एवं प्रकाशन सहज हो पाया है।

"कुरजां" के प्रथम अंक के संबंध में प्राप्त हुए सुझावों के अनुरूप "कुरजां" का द्वितीय अंक (जून 2025) आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है। स्वाभाविक है कि पत्रिका को और अधिक प्रभावी बनाने एवं रचनाकारों को प्रेरित करने में पाठकों के सुझाव बहुमूल्य सिद्ध होंगे, अत: आप सभी के सुझाव सादर आमंत्रित किए जाते है।

मैं कुरजां के इस अंक को प्रकाशित करने में सभी रचनाकारों एवं पत्रिका के संपादक मंडल का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। मैं निरंतर मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए प्रधान निदेशक महोदय के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

सुरेन्द्र कुमार जैन

अनुक्रमणिका

RCB & KI कार्यालय में CAG का निरीक्षण 5

ऑफिस दर्पण 7

रचनाकारों की कलम से 9

- डूमस्क्रॉलिंग:गंभीर मानसिक बीमारी और इससे बचाव 10
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI): वरदान या अभिशाप? 15
- $(x+y)^2$ कहाँ काम आ रहा है? एक दृष्टिकोण 17
- साहब 20
- धर्म आत्मिक उत्थान का साधन है 21
- ग़ज़ल 23
- प्लास्टिक से मुक्ति 24
- अंडमान निकोबार यात्रा वृतांत 26
- शिक्षा के साथ-साथ जीवन में खेलों का महत्व 31
- प्यारी बिटिया 33
- पहला सरकारी काम, यादों का संग्राम 34
- मेहंदीपुर बालाजी 35

फन @ वर्क 37

शैक्षिक भ्रमण 41

कार्यालय द्वारा कर्मचारियों और कॉलोनी निवासियों के लिए नेत्र जांच शिविर का आयोजन 43

आपदा प्रबंधन कार्यक्रम 45

विभिन्न कैग (CAG) कार्यालयों से पिछली हिंदी पत्रिका के लिए प्राप्त प्रशंसा पत्र 47

RCB & KI कार्यालय में भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक का निरीक्षण

(09.01.2025)

पर्यावरण संरक्षण और हरित पहल को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक द्वारा RCB&KI परिसर में पौधारोपण किया गया। यह कदम स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण बनाने की दिशा में उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

नि. एवं म. परीक्षक महोदय द्वारा RCB&KI के कर्मचारियों एवं विभाग के प्रमुख अधिकारियों के साथ मिलकर विभिन्न कार्यों और योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। उनकी यह बातचीत टीम के उद्देश्यों को स्पष्ट करने और सहयोग बढ़ाने की दिशा में उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

ऑफिस दर्पण

(इस सेक्शन में हमने विभिन्न कार्यालय कार्यक्रमों की झलकियां। ये तस्वीरें हमारे टीम के सहयोग, उत्साह और आयोजन की यादगार झलक दिखाती हैं। ऑफिस दर्पण के माध्यम से हम उन खास पलों को साझा करते हैं जिन्होंने हमारे कार्यस्थल को एक परिवार की तरह बनाया है।)

राजभाषा संसदीय समिति द्वारा संस्थान को प्रदान किए गए सम्मान के अवसर पर प्रधान निदेशक एवं टीम की स्मृति-झलक।

प्रशिक्षण संस्थान के श्रेणी में 'वर्ष का सर्वश्रेष्ठ कार्यालय' सम्मान।

76वें गणतंत्र दिवस समारोह, 2025 की समूह फोटो

कार्यालय सदस्य जन्मदिवस समारोह

रचनाकारों की कलम से

डूमस्क्रॉलिंग:
गंभीर मानसिक बीमारी और इससे बचाव

श्री दीपक सैनी
स.प्र.अ.

क्या आपने पहले कभी डूमस्क्रॉलिंग (Doom-scrolling) शब्द या मानसिक बीमारी के नाम के बारे में सुना है? शायद नहीं। लेकिन शायद आप अखबार, सोशल मीडिया, रील्स, टीवी, डिजीटल माध्यम से खबरें और वीडियो आदि अवश्य देखते होंगे। कौनसी वाली खबरें और वीडियो? खबरों पर सरसरी निगाह और आशावादी खबरें या निराशाजनक और नकारात्मक खबरें? निराशाजनक खबरें और वीडियो देखने में मिलने वाला अजीब सा आनंद!!! इसे ही डूमस्क्रॉलिंग कहते हैं। हममें से अधिकतर लोग इस मानसिक समस्या से पीड़ित होते हैं।

आज के इस डिजिटल युग में जब भी हम मोबाइल, लैपटॉप, टीवी या टैबलेट खोलते हैं, तो हमें ढेर सारी खबरें और सोशल मीडिया अपडेट्स दिखती हैं। इनमें से ज्यादातर खबरें नकारात्मक होती हैं, जैसे—कोई दुर्घटना, प्राकृतिक आपदा, आर्थिक मंदी, राजनीतिक भूचाल या किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की मृत्यु। ऐसी खबरों को बार-बार और लगातार पढ़ने की आदत को डूमस्क्रॉलिंग (Doom-scrolling) कहा जाता है। यह आदत धीरे-धीरे हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालती है और हमें चिंता, तनाव और अवसाद की ओर धकेल देती है।

डूमस्क्रॉलिंग क्या है?

डूमस्क्रॉलिंग का अर्थ है लगातार नकारात्मक या डराने वाली खबरों को पढ़ते रहना, भले ही हमें पता हो कि इससे हमारा मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। यह आदत अक्सर सोशल मीडिया, न्यूज़ वेबसाइट्स और ऑनलाइन फोरम्स के जरिए बढ़ती है, जहां हर पल नई-नई खबरें अपडेट होती रहती हैं। व्यक्ति नकारात्मक खबरों या वीडियो के जाल में ऐसा फँस जाता है कि यहाँ से निकलना बहुत मुश्किल हो जाता है। स्थिति ऐसी हो जाती है कि व्यक्ति के अर्थचेतन मन में भी ऐसी खबरें देखने और उनकी तह तक जाने की ललक उठती रहती है। डूमस्क्रोलिंग का सबसे ज्यादा असर हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है।

तो कोई व्यक्ति डूमस्क्रोलिंगके जाल में फँसता क्यों है?

कई बार व्यक्ति को लगता है कि वह खुद को सुरक्षित रखने के लिए किसी जानकारी को प्राप्त कर रहा है। धीरे-धीरे व्यक्ति भ्रमित हो जाता है और उसका कंट्रोल सिस्टम भी सही से काम नहीं करता। व्यक्ति को लगता है कि वह किसी संकट या आपदा के बारे में उचित जानकारी रखेगा तो वह सुरक्षित रहेगा यानी परिस्थितियों को नियंत्रित करने का यह भ्रम डूमस्क्रोलिंग को बढ़ावा देता है।

इसका एक कारण फोमो (**FOMO -Fear of Missing Out**) यानी 'कुछ छूट जाने का डर' भी होता है अर्थात् लोगों को लगता है कि कोई खबर उनसे छूट तो नहीं जाएगी, उन्हें हर चीज की जानकारी पता होनी चाहिए खासकर ऐसी खबरें जो चर्चा में हों और खासकर राजनीतिक खबरें। इससे अवचेतन मन में नकारात्मक विचारों को बल मिलता है। इस कारण से व्यक्ति बार-बार ऐसी खबरों की सूचना अद्यतन करता रहता है।

अत्यधिक सूचना (Information Overload): इंटरनेट पर हर सेकंड नई-नई खबरें अपडेट होती रहती हैं, जिससे हमें हमेशा लगता है कि हमें और अधिक जानने की जरूरत है।

इंसानी स्वभाव: हमारा दिमाग स्वाभाविक रूप से नकारात्मक चीजों की ओर अधिक आकर्षित होता है। जब हम कोई नकारात्मक खबर देखते हैं, तो हमारा दिमाग उसे और अधिक खोजने लगता है।

सोशल मीडिया एल्गोरिदम: आजकल सोशल मीडिया और एआई के जमाने में इस तरह के एल्गोरिथम विकसित हो गए हैं कि ये तकनीक ऐसी खबरों को प्राथमिकता देती हैं जिससे उत्तेजना बढ़े, ध्यान आकर्षित हो। यह प्लेटफॉर्म हमें अधिक समय तक जोड़े रखने के लिए डिजाइन किए जाते हैं। इस कारण हम इस चीज को समझ नहीं पाते और डूमस्क्रोलिंग के शिकार हो जाते हैं।

जैसे- फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स हमारी पसंद के अनुसार खबरें दिखाते हैं। यदि हम नकारात्मक खबरें अधिक देखते हैं, तो ये प्लेटफॉर्म हमें ऐसी खबरें और ज्यादा दिखाने लगते हैं।

नकारात्मक खबरें देखते-देखते हमारा दिमाग नकारात्मकता का इतना आदि हो चुका होता है कि वह किसी भी बात का दूसरा पहलू देखना ही नहीं चाहता या फिर उसको किसी घटना का सकारात्मक पहलू नजर ही नहीं आता। यानी वह राजनीतिक घटना, आर्थिक मंदी की समस्या, आपदा की समस्या, किसी की मृत्यु इतनी बड़ी समस्या नहीं होती जितनी कि उस व्यक्ति को नजर आने लगती है। इससे तनाव, अवसाद और दूसरे मानसिक विकार भी पैदा हो जाते हैं। स्वास्थ्य खराब होने लगता है। नींद का पैटर्न गड़बड़ा जाता है।

इस स्थिति को कटस्ट्रोफाइजिंग (Catastrophizing) कहा जाता है। यानि डूमस्क्रालिंग से एक नयी बीमारी पैदा हो जाती है।

उदाहरण:

1. **कोविड-**19 **महामारी के दौरान** – लॉकडाउन के समय कई लोग लगातार कोरोना के केस, मौतों और अस्पतालों की स्थिति के बारे में पढ़ते रहे। इससे उनमें डर और तनाव बढ़ गया।
2. **राजनीतिक या आर्थिक संकट** – जब कोई बड़ा राजनीतिक संकट आता है, जैसे सरकार का पतन या आर्थिक मंदी, लोग लगातार इस बारे में खबरें पढ़ते रहते हैं, जिससे उनका मानसिक तनाव बढ़ता है।
3. **युद्ध और आतंकवादी हमले** – जब कहीं युद्ध या आतंकवादी हमला होता है, लोग न्यूज़ चैनलों और वेबसाइट्स पर इससे जुड़ी खबरें देखते रहते हैं, जिससे उनमें नकारात्मकता बढ़ती है।
4. **प्राकृतिक आपदाएं** – भूकंप, बाढ़, तूफान जैसी आपदाओं के बारे में लगातार जानकारी लेना भी डूमस्क्रॉलिंग का एक उदाहरण है।

डूमस्क्रॉलिंग के मानसिक प्रभाव

1. **चिंता और तनाव:** बार-बार नकारात्मक खबरें पढ़ने से मन में डर सा बैठ जाता है, जिससे निराशा और तनाव बढ़ता है।
2. **डिप्रेशन (अवसाद):** निरंतर नकारात्मक खबरें देखने से व्यक्ति का मन उदास हो सकता है और अवसाद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
3. **एकाग्रता में कमी** – बार-बार खबरें देखने की आदत ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है।
4. **अत्यधिक चिंता** (Hypertension): व्यक्ति बार-बार इन्हीं नकारात्मक खबरों के बारे में सोचता रहता है, जिससे दिमाग में बेचैनी बनी रहती है।
5. **नकारात्मकता बढ़ना**: दुनिया को नकारात्मक रूप में देखने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है और व्यक्ति को हर चीज़ डरावनी लगने लगती है।

डूमस्क्रालिंग के शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:

1. **नींद की समस्या** (Insomnia): देर रात तक खबरें देखने से नींद प्रभावित होती है, जिससे थकान और ऊर्जा की कमी महसूस होती है।
2. **समय की बर्बादी**– जरूरी कामों को छोड़कर घंटों तक मोबाइल स्क्रीन पर व्यस्त रहना उत्पादकता को कम कर सकता है।
3. **ब्लड प्रेशर और हृदय रोग का खतरा:** तनाव और चिंता लंबे समय तक बनी रहने से ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है और हृदय से जुड़ी बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है।

डूमस्क्रॉलिंग से बचने के उपाय-

ऐसा नहीं है कि इस मानसिक विकार से बचा नहीं जा सकता। इससे बचाव के लिए हमें दिमाग की कार्यप्रणाली को समझने और खुद सक्रिय होकर काम करने की जरूरत है। यहाँ कुछ उपाय बताये गये हैं जो डूमस्क्रोलिंग से बचाव में काम आ सकते हैं-

1. समय सीमा तय करें

- दिनभर में खबरें पढ़ने के लिए एक निश्चित समय निर्धारित करें (जैसे सुबह 15 मिनट और रात में 15 मिनट)।
- सोने से पहले कम से कम 1 घंटे पहले डिजीटल स्क्रीन से दूर रहें।

2. सकारात्मक कंटेंट देखें

- न्यूज़ की जगह अच्छे पॉडकास्ट, किताबें, प्रेरणादायक वीडियो और हल्के-फुल्के मनोरंजक कार्यक्रम देखें।
- सोशल मीडिया पर ऐसे पेज फॉलो करें, जो सकारात्मक और शिक्षाप्रद सामग्री प्रदान करते हैं।

3. डिजिटल डिटॉक्स करें

- हफ्ते में कम से कम एक दिन बिना मोबाइल और इंटरनेट के बिताने की कोशिश करें।
- प्रकृति के करीब जाएं, वॉक पर जाएं या दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताएं।

4. सोशल मीडिया की सफाई या डिक्लटर करें

- उन न्यूज़ पेज या अकाउंट्स को अनफॉलो करें जो सिर्फ नकारात्मक खबरें शेयर करते हैं।
- खुद भी ऐसी खबरें शेयर करने से बचें, जो सिर्फ डर और चिंता बढ़ाती हैं।

5. ध्यान और योग का अभ्यास करें

- हर दिन कम से कम 15-20 मिनट ध्यान (Meditation) करें।
- योग और प्राणायाम करने से मानसिक शांति बनी रहती है और तनाव कम होता है।

6. खुद को व्यस्त रखें

- किसी नई हॉबी को अपनाएं, जैसे पेंटिंग, म्यूजिक, डांस, गार्डनिंग आदि।
- दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताएं और वास्तविक दुनिया में बातचीत करें।

निष्कर्ष

डूमस्क्रॉलिंग एक खतरनाक आदत है, जो हमें मानसिक रूप से कमजोर और नकारात्मक बना सकती है। हमें समझना होगा कि हर समय खबरें पढ़ते रहना जरूरी नहीं है। जरूरत है कि हम डिजिटल दुनिया का संतुलित उपयोग करें और अपने मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें।

आज ही एक कदम उठाएं—डूमस्क्रॉलिंग से बचें और एक सकारात्मक जीवन जीएं! याद रखें- सिर्फ चिंतातुर होकर हर नकारात्मक विशेषकर राजनीतिक खबरों में आकंठ डूबे रहने से कुछ बदलने वाला नहीं है। स्व-जीवन और समाज की दशा-दिशा बदलने के लिए वास्तविक बदलाव और मेहनत की जरूरत होती है। एल्गोरिदम से संचालित न्यूज-पोर्टल केवल विज्ञापन हासिल करने और आपको मानसिक विकार प्रदान करने के लिए ही बने होते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI): वरदान या अभिशाप?

श्री दीपक भारद्वाज
यंग प्रोफेशनल

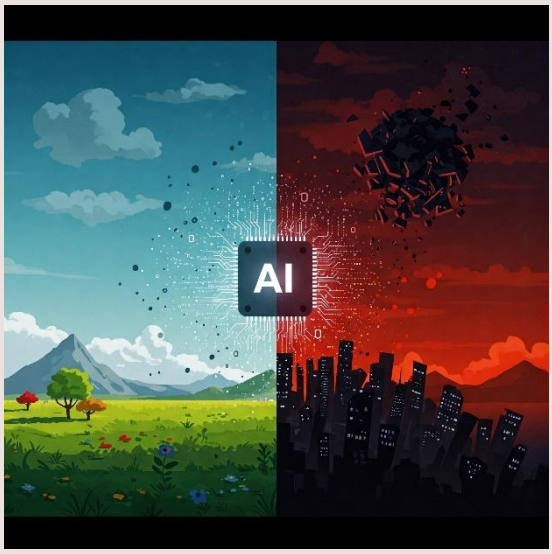

आज के दौर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence या AI) एक ऐसा शब्द है जो हर क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। चाहे वह स्वास्थ्य सेवाएं हों, शिक्षा, वित्त, या फिर उद्योग, AI ने अपनी पैठ बना ली है। लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या AI मानवता के लिए एक वरदान है या फिर एक अभिशाप? इस प्रश्न का उत्तर इतना सरल नहीं है, क्योंकि AI के फायदे और नुकसान दोनों ही हैं। यह निर्भर करता है कि हम इस तकनीक का उपयोग कैसे करते हैं। AI के प्रभाव को समझने के लिए हमें इसके सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को गहराई से समझना होगा।

AI: एक वरदान के रूप म

AI ने मानव जीवन को कई मायनों में सरल और सुविधाजनक बना दिया है। आज AI की मदद से काम कुछ ही मिनटों में पूरे हो जाते हैं, जिन्हें पहले करने में कई घंटों का समय लगता था। उदाहरण के तौर पर, स्वास्थ्य क्षेत्र में AI ने क्रांति ला दी है। अब डॉक्टर AI की मदद से बीमारियों का पता लगाने और उनका इलाज करने में सक्षम हैं। AI आधारित मशीनें, एक्स-रे, MRI और अन्य मेडिकल रिपोर्ट्स को तेजी से और सटीकता से विश्लेषित कर सकती हैं, जिससे मरीजों को बेहतर इलाज मिलता है। इसके अलावा, AI ने दुर्लभ बीमारियों की पहचान करने और उनके इलाज के लिए नए तरीके खोजने में भी मदद की है। AI आधारित रोबोटिक सर्जरी ने सर्जरी को और सुरक्षित और प्रभावी बना दिया है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी AI ने नए आयाम जोड़े हैं। आज छात्र AI आधारित ऐप्स और प्लेटफॉर्म्स की मदद से अपनी पढ़ाई को और प्रभावी ढंग से कर सकते हैं। AI ट्यूटर्स छात्रों को उनकी गति के अनुसार पढ़ाते हैं और उनकी कमजोरियों को पहचानकर उन्हें दूर करने में मदद करते हैं।

इसके अलावा, AI ने व्यवसायों को भी नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। डेटा विश्लेषण, ग्राहक सेवा, और उत्पादन प्रक्रियाओं में AI का उपयोग करके कंपनियां अपनी दक्षता और उत्पादकता को बढ़ा सकती हैं। AI आधारित चैटबॉट्स ने ग्राहक सेवा को और तेज और प्रभावी बना दिया है, जिससे ग्राहकों को तुरंत समाधान मिलता है।

AI: एक अभिशाप के रूप में

हालांकि, AI के फायदों के साथ-साथ इसके कुछ गंभीर नुकसान भी हैं। सबसे बड़ी चिंता यह है कि AI मानव रोजगार के लिए खतरा बन सकता है। जैसे-जैसे AI और ऑटोमेशन तकनीकें विकसित हो रही हैं, कई नौकरियां खत्म होती जा रही हैं। उदाहरण के लिए, विनिर्माण उद्योग में रोबोट्स ने मानव श्रम की जगह ले ली है। इससे बेरोजगारी बढ़ने का खतरा है, जो समाज में असमानता और आर्थिक अस्थिरता को जन्म दे सकता है। इसके अलावा, AI के दुरुपयोग की संभावना भी एक बड़ी चिंता का विषय है। AI का उपयोग साइबर हमलों, निगरानी, और यहां तक कि हथियारों के निर्माण में किया जा सकता है। यदि AI को गलत हाथों में सौंप दिया जाए, तो यह मानवता के लिए विनाशकारी साबित हो सकता है। इसके अलावा, AI के निर्णय लेने की प्रक्रिया में पूर्वाग्रह (bias) की समस्या भी है। यदि AI को गलत डेटा के साथ प्रशिक्षित किया जाए, तो यह भेदभावपूर्ण निर्णय ले सकता है, जो समाज में असमानता को बढ़ा सकता है। उदाहरण के लिए, AI आधारित भर्ती प्रक्रियाओं में यदि डेटा में पूर्वाग्रह हो, तो यह कुछ समूहों के लोगों को नौकरी से वंचित कर सकता है। इसके अलावा, AI की निर्णय प्रक्रिया को समझना मुश्किल हो सकता है, जिससे यह पता लगाना मुश्किल हो जाता है कि AI ने किस आधार पर निर्णय लिया है।

AI और नैतिकता

AI के उपयोग में नैतिकता का सवाल भी एक बड़ा मुद्दा है। AI को विकसित करते समय हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि यह मानवीय मूल्यों और नैतिकता के अनुरूप हो। AI को इस तरह से डिजाइन किया जाना चाहिए कि यह मानवीय गरिमा और अधिकारों का सम्मान करे। इसके अलावा, AI के उपयोग को नियंत्रित करने के लिए सख्त नियम और कानून बनाने की आवश्यकता है। यह सुनिश्चित करना होगा कि AI का उपयोग सही तरीके से किया जाए और इसका दुरुपयोग न हो।

$(x+y)^2$ कहाँ काम आ रहा है?

एक दृष्टिकोण

श्री संजय गौतम
स.प्र.अ.

आपने अक्सर अपने आस पास लोगों को यह प्रश्न करते अवश्य सुना होगा "$(x+y)^2$ कहीं काम आ रहा है क्या जीवन में?" , "अवकलन-समाकलन, बीजगणित, त्रिकोणमिति कहीं काम आते हैं क्या जीवन में?" या फिर यह कहते सुना होगा "जो भी हमें विद्यालयों में पढाया जा रहा है उसके अधिकतर भाग का जीवन में कोई योगदान नहीं है, फिर विद्यालयों द्वारा उन्हें क्यों पढाया जा रहा है" एसे प्रश्नों के आधार पर यह तर्क दिया जाता है "पूरी शिक्षा प्रणाली ही ख़राब है"।

सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है कि शिक्षा कोई उपभोग की वस्तु नहीं की अगर खरीद ली तो वह उपयोग में ही आए। शिक्षा हमारे मस्तिष्क की मानसिक सहनशक्ति (मेंटल स्टेमिना) का विकास करती है। यदि हम व्यायामशाला (जिम) में जाकर अपनी पेशियों को मजबूत बनाते हैं इसका अर्थ यह नहीं कि हमें किसी से झगड़ा करना हो तो ही ऐसा किया जाये अन्यथा नहीं। या फिर शरीर का जो भी भाग ज्यादा काम आए, व्यायामशाला (जिम) में जाकर शरीर के बस उसी भाग का व्यायाम किया जाये। यह तो ऐसा हुआ जैसे व्यायामशाला (जिम) उन लोगों के लिए व्यर्थ है जो बॉडीबिल्डिंग या खेलों के पेशे में नहीं हैं।

"$(x + y)^2$", बीजगणित, ज्यामिति, त्रिकोणमिति या अवकलन-समाकलन जैसे सिद्धांत सीधे उपयोग में न भी आएं, लेकिन इनका अध्ययन व्यक्ति में तार्किक सोच, विश्लेषणात्मक क्षमता और समस्या हल करने की क्षमता विकसित करता है, जो हर क्षेत्र में जरूरी है — चाहे वह नौकरी हो, व्यापार हो या जीवन के निर्णय। कठिन विषयों को पढ़ना — भले ही वह त्रिकोणमिति हो या बीजगणित या अन्य — एक मानसिक अनुशासन सिखाता है। यह वही अनुशासन है जो जीवन में समय पर सही निर्णय लेने, वित्तीय प्रबंधन, और तनावपूर्ण परिस्थितियों से निपटने में मदद करता है। गणित के ये सिद्धांत भले ही रोज़मर्रा के जीवन में सीधे इस्तेमाल न हों, लेकिन वे एक प्रभावी, अनुशासित, और तार्किक सोच रखने वाले नागरिक के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए यह कहना कि ये "कहीं काम नहीं आते" — शिक्षा के मूल उद्देश्य को ही गलत समझना है।

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमारे मानसिक सहनशीलता (मेंटल स्टेमिना) को बारह से पंद्रह वर्षों की अवधि में प्रशिक्षित करती है और उसे बढ़ाती है। सुबह उठना, स्कूल जाना, स्कूल में रोज़मर्रा की

समस्याओं से जूझना, परीक्षाओं की तैयारी करना, असफलता का डर झेलना, असफलता और सफलता दोनों का सामना करना—अगर सफल हो जाएं तो और बेहतर प्रदर्शन करना, अगर असफल हो जाएं तो हार न मानना, उच्च कक्षाओं में जटिल विषयों का अध्ययन करना, बिना रुचि के भी पढ़ाई करना, अनुशासित जीवन विकसित करना—ये सभी महत्वपूर्ण पहलू हैं जो जीवन से पूरी तरह मेल खाते हैं।

आगे चलकर हमारे जीवन में इन्ही परिस्थितियों का दोहराव होता है जब हम वास्तविक दुनिया में प्रवेश करते हैं । जैसे कि समय सीमा का पालन करना, काम के दबाव का सामना करना आदि। जैसे-जैसे कोई जीवन में आगे बढ़ता है, नौकरी और व्यापार दोनों में जीवन की जटिलताएँ बढ़ती जाती हैं। और इन सभी जटिलताओं से निपटने में, शिक्षा की यह पूरी प्रक्रिया हमारी मदद करती है। बारह- पंद्रह वर्ष के इस संघर्ष से गुजरने के पश्चात एक ऐसे व्यक्तितत्व का निर्माण होता है जो आने वाली समस्याओं से आसानी से निपट सकता है। शिक्षा इस संघर्ष के लिए एक प्रशिक्षण शिविर की तरह काम करती है, जिससे गुज़र कर हम सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उभरते हैं।

जहाँ तक काम आने की बात है हम गणित विषय पर ही बात करते हैं जो की इस संबंध में सबसे अधिक निशाने पर रहता है। आज जो हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बात कर रहे हैं वह एक एडवांस मैथमेटिक्स की ही एप्लीकेशन है। विज्ञान के विकास में गणित की प्रमुख भूमिका रही है। आज जो विज्ञान ने अकल्पनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं वह सब गणित विषय के होने से ही संभव हो पाया है। अवकलन-समाकलन तो फिजिक्स, इंजीनियरिंग, स्टैटिस्टिक्स और कंप्यूटर मॉडलिंग जैसे क्षेत्रों की नीव है। इसके अतिरिक्त दैनिक जीवन में काम आने वाली अधिकतर वस्तुएं इसी वजह से संभव हो पाई है क्योंकि किसी न किसी के जीवन में गणित या विज्ञान या अन्य कोई विषय काम आया होगा। जब हम निम्न कक्षा में गणित का कोई पाठ पढ़ते हैं तो उच्च कक्षाओं में वह हमारे काम आता है जैसे कि निम्न कक्षा में जब हमने घातांक वाला पाठ पढ़ा तभी हम उच्च कक्षाओ में उस पर आधारित और भी जटिल पाठ पढ़ पाए। इस तरह सीढ़ी दर सीढ़ी हम आगे बढ़ते हैं। हाँ यह बात अलग है कि हम दसवीं या बारहवीं कक्षा के बाद किसी विषय को छोड़ दें तो वह आगे काम नहीं आती परन्तु जो विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु जाना चाहते है या अनुसंधान करना चाहते है उन्हें तो वह विषय अवश्य काम में आता है। इसी लिए यह तर्क पूर्ण रूप से गलत है कि इनका हमारे जीवन में कोई काम नहीं है। गणित के सिद्धांत भले ही रोज़मर्रा के जीवन में सीधे इस्तेमाल न हों, लेकिन वे एक प्रभावी, अनुशासित, और तार्किक सोच रखने वाले नागरिक के निर्माण में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाते स्कूल में कौन जानता है कि छात्र आगे चलकर किस क्षेत्र में जाएगा? कोई भी क्षेत्र — जैसे आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस, डेटा साइंस, अर्थशास्त्र, इंजीनियरिंग, विज्ञान — इन गणितीय अवधारणाओं पर आधारित होता है।

इसलिए इन्हें पढ़ना किसी विशेष कार्य के लिए नहीं, बल्कि संभावनाओं के दरवाजे खोलने के लिए होता है। इसके इतर सभी विषयो का मूलभूत ज्ञान हमें सामाजिक जीवन जीने में बहुत सहायता करता है। इसी कारणवश छोटी कक्षाओं में लगभग सभी विषयों का समावेश किया जाता है जिससे कि यह

सुनिश्चित हो सके कि चाहे व्यक्ति जीवन में कोई भी काम करे उसे बाकि विषयों का मूलभूत ज्ञान हो। जैसे कि भले ही कोई व्यक्ति सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र में कार्य करता है परन्तु उसे मतदान करना है तो उसे हमारे लोकतंत्र व संविधान का मूलभूत ज्ञान आवश्यक है ताकि वह बेहतर निर्णय ले सके तथा राष्ट्र निर्माण में भाग ले सके। इसी तरह सभी विषयों की मूलभूत जानकारी मनुष्य को एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है जो वास्तविकता के काफी करीब होता है।

अंततः मेरे अनुभव में गणित, विज्ञान और अन्य विषयों की अवधारणाएं भले ही दैनिक जीवन में हर किसी के लिए प्रत्यक्ष न हों, लेकिन उनका व्यापक और दीर्घकालिक प्रभाव हमारी सोच, दृष्टिकोण और निर्णय लेने की क्षमता पर पड़ता है।

साहब

श्रीमती सुधा शुक्ल
स.प्र.अ. (प्रशासन)

सुबह सवेरे कदम संभाले,
चले हैं 'साहब' नोट कमाने,
कड़क है इस्त्री, बुशर्ट सफ़ेद
माथे पर हैं शिकन अनेक |

भिंची है मुट्ठी, गाल धंसे हैं,
13 टंटे, 100 मसले हैं,
बस डिपो की भीड़ में गुम से
फिर भी कैसे अलग खड़े हैं |

रोज़ की किच-किच से जल थक कर,
साहब रोना चाहें भी 'गर
दुनिया वाले, हम -तुम मिलकर
मर्द को दर्द न होने दोगे...
साहब को न रोने दोगे!

धीरे धीरे बढ़ता गुस्सा,
चाय की ठंडी चुस्की पे निकला
देखो आज तुम चुप्पी साधो
साहब का माथा है ढीला !

यूँ ही सालों साल गुज़ारे
साहब ने 100 दर्द संभाले
जाने का जब समय था आया
साहब ने न शोर मचाया

साहब की जाते जाते भी
भिंची थी मुट्ठी, शिकन पड़ी थी
कफ़न की इस्त्री कड़क थी फिर भी
दाग न कोई, सफेदी बड़ी थी |

यूँ सोचो तो नाक में दम है
साहब तुम हो, साहब हम हैं
लम्बी गहरी सांसें, दो पल
सुकूं की चाय के लाले पड़े हैं |

पर समझो तो क्या ही कमी है
दुनिया सबके लिए यही है
सबके हिस्से आधे गम हैं
आधी खुशियाँ भी क्या कम हैं?

मुट्ठी खोल, माथा सहलाओ
झुके हुए कन्धों को उठाओ
थोडा ठहरो, वक़्त निकालो
थोड़े थोड़े होश संभालो

यूँ ही जीवन कट जाएगा
फिर ओ साथी पछताएगा
ऐसे भी क्या जीते रहना
घुट -घुट के गम पीते रहना

मर्दानगी न होगी चोटिल
रोने में न हिचकिचाओ
दिल के दर्द बहा दो सारे
मित्रों को तुम गले लगाओ
दिल हल्का और मन हो साफ़
जियो तुम, खुल कर मुस्कुराओ |

धर्म आत्मिक उत्थान का साधन है

श्री पदमचन्द गाँधी
वरि. लेखापरीक्षक अधिकारी (से.नि.)

धर्म मानव जीवन को उत्कृष्ट बनाने का सर्वोत्तम साधन है। इसके अभाव में जीवन का कोई मूल्य नहीं रह जाता। धर्मरुपी साधन द्वारा ही इस मानव भव की दुर्लभता को सार्थक किया जा सकता है। संवेदनशील, उदार और आन्तरिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है। जिन भावों से जीव दुर्गति में जाते हुए अटकता है, उच्च मंगल स्थान को प्राप्त करता है, वह धर्म ही है। ऐसे भाव श्रुत और चारित्र लक्षण वाले होते हैं अर्थात् अहिंसा, संयम और तप प्रधान होते हैं। इसलिए दशवैकालिकसूत्र में कहा गया है- धम्मो मंगल मुक्किट्ठ, अहिंसा संजमो तवो। इसी कारण धर्म सर्व मंगल है। धर्म का सम्बन्ध लोकैषणा, वित्तेषणा, पुत्रेषणा आदि एषणाओं की पूर्ति से नहीं है। उसका उद्देश्य तो जीवन को दुःख रहित बनाते हुए सर्वोच्चता तक पहुंचना है, शुद्ध रूप से आत्मशुद्धि की प्रधानता है। धर्म तो वह बहुमूल्य कोष है जो अवर्णनीय है।

धर्म ही एकमात्र ऐसा साधन है जो संसार सागर से तिराने वाला है। इसलिए उत्तराध्ययनसूत्र 14.40 में कहा गया है-एको हु धम्मो ताणं। जहां सरलता, निर्मलता, पवित्रता, सहजता है, वही धर्म है। दशवैकालिकसूत्र में कहा गया है-धम्म सुद्धस्स चिट्ठई। अर्थात् जैसे सिंहनी का दूध स्वर्ण पात्र में ही ठहर सकता है, वैसे ही धर्म सरलता में रहता है। धर्म आत्मा के गुणों को प्रकट करने का साधन है। जिसके द्वारा मानवीयता, सहिष्णुता, दया, प्रेम, करुणा, सदाचरण, स्नेह, कर्तव्यपरायणता, मैत्रीभाव, सत्यभाषण, विनयभाव आदि को प्रकट किया जाता है। ठाणांगसूत्र में कहा है-चत्तारि धम्म दारा। अर्थात् धर्म के खति, मुत्ति, अज्जवे, मद्दहवे अर्थात् क्षमा, विनय, सरलता और मृदुता, ये चार द्वार हैं। धर्म मानव जीवन का सार है। कहा भी गया है-धम्मस्स विणओ मूलं। अर्थात् विनय धर्म का मूल है। धर्म आत्मा को निर्मल बनाने का साधन है। धर्म यदि बचपन में मिलता है तो अनासक्त भाव, यौवन में मिलता है तो गृहस्थी का सही संचालन तथा वृद्धावस्था में मिलता है तो समाधिमरण का साधन बनता है। अतः धर्म धारण करने की वस्तु है, आचरण करने तथा जीवन में उतारने का साधन है। धर्म सत्य से उत्पन्न होता है, दया, दान, अहिंसा से विकसित होता है, क्षमा से सुरक्षित रहता है लेकिन कोध से धर्म का विनाश होता है। इसलिए यह कषाय का रुप है। इसे छोडना ही युक्ति संगत है।

धर्म बाहरी जीवन का आधार है जो धन बनकर प्रकट होता है। धर्म आन्तरिक आयाम भी है जो ध्यान बनकर मन को प्रकाशित करता है। धर्म जीवन का समग्र विकास है जो इहलोक और परलोक, दोनों को सुधारता है। धर्म के दो रुप हैं जिसमें पहला रुप व्यावहारिक जगत से जुडा है जिसे बाह्य रुप भी कहते हैं। जो द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता है। यह रुप जीवन मूल्यों को महत्व देता है। जिसमें नैतिकता, ईमानदारी, प्रामाणिकता, सहनशीलता, स्वावलम्बन, आत्म-परिष्कार आदि तत्व होते हैं जो आत्मवत् सर्वभूतेषु को सिद्ध करता है। धर्म धारण करने का साधन है अर्थात् धार्यते असौ इति धर्मः पर आधारित है। यह परिवार, समाज, देश आदि के प्रति कर्तव्यों का बोध कराता है। लेकिन इसका पारमार्थिक रुप आत्मशुद्धि या मुक्ति है।

धर्म का दूसरा रुप जो सीधा आत्मा से जुड़ा है। जिसमें आत्मशुद्धि के भाव समाहित हैं। इसी से बाह्य सुखों की नश्वरता का बोध होता है। इसका कार्य कर्मों का क्षय करना है तथा नये कर्मों के बन्ध होने से रोकना अर्थात् निर्जरा और संवर करना है। धर्म कर्मकाण्ड से नहीं, प्रज्ञा से जुडा होता है, आत्म मूल्यांकन से जुडा होता है। उत्तराध्ययनसूत्र स्पष्ट करता है-आत्मज्ञेता ही परम विजेता होता है। सहस्रो योद्धाओं को जीतने से अच्छा स्वयं को जीतना है। इसके द्वारा आभ्यान्तर रुप से स्वचेतना का परिष्कार होता है। जिससे व्यक्ति में सकारात्मक परिवर्तन आता है। समता, शान्ति, सद्भाव, क्षमा, शील, सत्य, समाधि आदि का अनुभव कराता है तथा सम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा एवं आस्था द्वारा सम्यक्तव का बोध कराता है।

धर्म एक आदर्श जीवनशैली है। शान्ति प्राप्त करने की विमल विधा है। सर्व जन कल्याणकारी आचार संहिता है। धर्म आम आदमी के आत्मकल्याण, आत्म-उत्थान के लिए, मानव-उत्थान के लिए है। धर्म तो निस्सारता में सारभूत की प्राप्ति का नाम है। अतः सारभूत को समझना जरुरी है। सारभूतता तो छिलकों को अलग कर सार को ग्रहण करना है। धर्म सदैव जाग्रत रहने की प्रेरणा देता है। विकारों के प्रति सजग रहना भी सीखाता है। आसक्ति से उत्पन्न 'मैं' और 'अहम' को दूर करने का साधन है। धर्म ऐसा साधन है जो आसक्त को अनासक्त में तथा राग को श्रद्धा में बदलता है। अतः धर्म वह साधन है जो राग-द्वेष की ग्रन्धि को तोडने का कार्य करता है।

अतः स्पष्ट है धर्म कोई पंथ, सम्प्रदाय विशेष का पोषक या लोकैषणा का साधन या चमत्कारों का केन्द्र बिन्दु नहीं है। यह जो जीवन में उतारने का साधन है, आत्मकल्याण का प्रतिपादक है जिसका अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है। इस प्रकार धर्म आत्मिक उत्थान का साधन है।

ग़ज़ल

श्री रामानंद शर्मा
वरि. लेखा परीक्षक
(से.नि.)

संवादों के कायदों के लिहाज से
स्थिति पैदा करनी होगी आज से ॥

समर्थन ने पूरा मिल पाये मूल से
कमाना ही होगा इसे तुम्हें ब्याज से ॥

संगीत में संगीत पैदा करना है तुम्हें
महफिल को सँवारों तुम इस आगाज से ॥

प्रतिसाद दो या प्रतिक्रिया यह तुम्हें सोचना है
सभी रहस्य ही जाएंगे, पर्दा उठेगा राज से ॥

मैं मिलूँगा तुम्हें उसी जगह जहां था मैं
दशो दिशाओं में पुकारो कुछ ना होगा आवाज से ॥

रक्षक-विधान तुम तैयार कर लो सभी
बच न सकोगे तुम तकलीफ और गाज से ॥

पथिक बनकर जीवन सँवारा करो अपना
छोड़ दो सभी लालसा मोह छोड़ दो आज से ॥

सन्यस्त जीवन जीना यूं ही सहज नहीं है
जी सको तो गृहस्थ जीवन जी को आज से ॥

प्लास्टिक से मुक्ति

सुश्री अदिति शर्मा
यंग प्रोफेशनल

जल, थल, नभ में प्लास्टिक फैलाता है प्रदूषण;
प्लास्टिक से डरो, नहीं तो परिणाम होंगे बहुत ही भीषण।

प्लास्टिक से भर गये हैं नदी, झील, सागर, महासागर;
इन जलस्त्रोतों को बचाने के प्रयास करने होंगे तत्पर।

प्लास्टिक के कप प्लेटों में जो खाना और फास्टफूड तुम खाते हो;
कैंसर, दिल और अनेकों बीमारियों का खतरा तुम पास बुलाते हो।

प्लास्टिक के कपों में चाय की चुस्की का बड़ा शौक है तुमको;
इसमें घुले रसायन धीमी और मीठी मौत देते हैं तुमको।

सीसा और आर्सेनिक मिले प्लास्टिक के खिलौनों से बच्चे खेलते हैं;
फिर बड़े होकर ना जाने कौन-कौनसी बीमारियाँ झेलते हैं।

प्लास्टिक की बोतल में पानी पीने का बहुत बढ़ गया है चलन;
चुपके-चुपके तुम्हारी और धरती का स्वास्थ्य निगलता है ये फैशन।

प्लास्टिक का कचरा रोकता है सीवरेज, सड़क और नाली;
तभी तो बारिश के दिनों में हो जाती है सड़कों की बदहाली।

इधर-उधर घूमते आवारा पशु खाके प्लास्टिक मरते हैं बेमौत;
कुछ समझे मित्र ! प्लास्टिक उपयोग करने में है खतरा बहुत।

एकल इस्तेमाल प्लास्टिक के इस्तेमाल से बना लें दूरी;
वर्ना दूषित पर्यावरण को झेलना हो जायेगी मजबूरी।

कुछ दोष हमारी कचरा प्रबंधन प्रणालियों का भी तो है;
आम आदमी के साथ सरकारों के जागने का समय भी तो है।

कपड़े का थैला लेकर जब तुम निकलोगे करने खरीददारी;
प्रकृति होगी साफ-सुथरी और मन को मिलेगी खुशी बहुत सारी।

प्लास्टिक नहीं, मिट्टी के बर्तनों में लें खाने का स्वाद;
हे पार्थ, कुम्हार का परिवार भी तुम्हे देगा आशीर्वाद।

प्लास्टिक से मुक्ति के उपायों की सबसे करें चर्चा;
हे दोस्त, इसमें लाभ ही लाभ और ना कोई खर्चा।

प्लास्टिक पुनर्चक्रण केन्द्रों पर पहुँचाएं कचरा;
भले मानुष ! तुम्हारे इस कार्य से मुस्कुरा उठेगी वसुंधरा।

पुनर्चक्रित प्लास्टिक से दीवारें और सड़कें बनवाइये;
ऐसे कुछ तरीकों से इस दानव को मार भगाइये।

माझी कर ले प्रण तो पहाड़ भी रास्ता दे सकता है,
ये सिर्फ प्लास्टिक है, कुछ समाधान निकल सकता है।

अंडमान निकोबार यात्रा वृतांत

श्रीमती मनिषा सैनी
अतिथि लेखक

यात्राएँ यानि घूमना फिरना, मौज मस्ती, खाना-पीना और छुट्टियों का आनंद। हम सभी कभी ना कभी घूमने अवश्य जाते हैं। हमें भी पिछले दिनों भारत सरकार द्वारा उपलब्ध करवायी जाने वाली एलटीसी सुविधा के माध्यम से पोर्ट ब्लेयर (अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह) की यात्रा करने का अवसर मिला। इस यात्रा का यात्रा वृतांत मैं आपके समक्ष पेश कर रही हूँ। उम्मीद है भविष्य में इस द्वीप समूह की यात्रा करने वाले सभी कर्मचारियों व अधिकारियों के लिए यह उपयोगी साबित होगा तथा पहले यात्रा कर चुके कर्मचारियों व अधिकारियों की यादें ताजा करेगा।

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह भारत के सुदूर दक्षिण की तरफ पानी से घिरा लगभग 500 द्वीपों का एक समूह है जिसमें से केवल 35-40 द्वीपों पर ही लोग रहते हैं। यहाँ का एकमात्र हवाई-अड्डा वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है।

अंडमान की यात्रा करने से पहले कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

1. हवाई यात्रा के टिकट समय पूर्व ही हासिल कर लें ताकि अनावश्यक परेशानी ना हो।
2. यदि आप अपने स्तर पर जा रहे हैं तो फेरी टिकट पहले ही हासिल कर लें। क्योंकि एक द्वीप से दूसरे द्वीप पर जाने का यही एक साधन है। यदि आप यात्रा पैकेज के माध्यम से जा रहे हैं तो एजेंट इन सभी की व्यवस्था करेगा। [पोर्ट ब्लेयर से हैवलॉक, हैवलॉक से नील द्वीप या पोर्ट ब्लेयर, नील द्वीप से पोर्ट ब्लेयर]
3. **वहाँ के कुछ प्रमुख शहरों के नाम बदल गये हैं-**
   पोर्ट ब्लेयर का नया नाम- श्री विजयपुरम
   हैवलॉक का नया नाम- स्वराज द्वीप
   नील द्वीप का नया नाम- शहीद द्वीप
   रॉस द्वीप का नया नाम- नेताजी सुभाष चंद्र बोस (NSCB) द्वीप
4. यदि संभव हो तो अपनी पसंद की स्कूटी या बाइक या कार किराए पर लें।
   लगभग 500-650/- और अधिकतम 1000/- प्रतिदिन (बाइक या स्कूटी पर निर्भर करता है) किराए पर लें।

यात्रा की शुरूआत

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह पहुंचने के लिए आप जल मार्ग या वायु मार्ग का प्रयोग कर सकते हैं। जहाज से पहुंचना महंगा पड़ता है तथा समय भी अधिक लगता है (लगभग तीन-चार दिन)। हवाई जहाज के माध्यम से आप कुछ ही घंटों में वहाँ पर पहुंच जाते हैं। यदि आप कोलकाता, चेन्नई, बेंगलुरु, भुवनेश्वर आदि जगहों से उड़ान भरते हैं तो आप सीधी उड़ान के माध्यम से 2-3 घंटे में वहाँ पहुंच जाएंगे। यदि आप अन्य जगहों से आते हैं (जैसे कि जयपुर, नई दिल्ली, जम्मू आदि) तो आपको इन जगहों पर कुछ घंटे का ले-ओवर करना होता है। इसलिए आपको उससे पहले वाली रात को चलना होगा ताकि आप अगले दिन सुबह जल्दी पहुंच जाएँ।

पहला दिन:

पोर्ट ब्लेयर जल्दी सुबह पहुँचें, होटल में चेक-इन करें, जलपान आदि करें और उसके बाद घूमने निकल जाएँ।

सेलुलर जेल:

अंग्रेजों के अत्याचारों की याद दिलाती यह जेल एक एतिहासिक स्थल है जिसे अपने देश के गौरवशाली इतिहास पर गर्व करने वाले हर भारतीय को जरूर देखना चाहिए।

(प्रवेश टिकट 30/- प्रति व्यक्ति)

सेलुलर जेल में शाम को लाइट और साउंड शो देखें (शुल्क 300/- प्रति वयस्क और 5 वर्ष से अधिक उम्र के बच्चे के लिए 150/-)।

लाइट शो की बुकिंग 6-7 दिन पहले वेबसाइट (https://www.andamantourism.gov.in/) से करवाना ज़रूरी है।

1943 तिरंगा पॉइंट:

यह एक ऐतिहासिक स्थल है जहां नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय धरती पर पहली बार भारतीय ध्वज फहराया था।

कॉर्बिन कोव बीच:

पोर्ट ब्लेयर शहर से छह किलोमीटर दूर नारियल-ताड़ के पेड़ों से घिरा समुद्र तट तैराकी और धूप सेंकने के लिए आदर्श है।

पोर्ट ब्लेयर में शाकाहारी रेस्टोरेंट - अन्नपूर्णा रेस्टोरेंट।

दूसरा दिन:

वांडूर बीच एवं महात्मा गांधी मरीन इंटरप्रिटेशन सेंटर:

सुबह वांडूर बीच (पोर्ट ब्लेयर हवाई अड्डे से 29 किलोमीटर दूर) जाएँ। यह बहुत ही साफ और सुंदर बीच है लेकिन पर्यटकों की संख्या कम होती है। वहीं पर स्थित महात्मा गांधी मरीन इंटरप्रिटेशन सेंटर अवश्य जाएँ।

जॉली बॉय आइलैंड या रेड स्किन आइलैंड:

वांडूर बीच से ही आप जॉली बॉय आइलैंड या रेड स्किन आइलैंड भी जा सकते हैं। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में स्थित जॉली बॉय द्वीप और रेड स्किन द्वीप अपनी प्राकृतिक सुंदरता, प्रवाल भित्तियों और समुद्री जीवन के लिए प्रसिद्ध हैं। दोनों द्वीप महात्मा गांधी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान का हिस्सा हैं। यहां का

पानी बहुत ही अधिक स्वच्छ है। बोट से इस द्वीप तक पहुंचने का किराया 1800/- प्रति व्यक्ति है। जॉली बॉय या रेड स्किन आइलैंड जाने के लिए 2-3 दिन पहले वहाँ के प्रशासन से अनुमति लेनी पड़ती है।

चिड़िया टापू एवं मुंडा पहाड़ बीच:

वांडूर बीच से चिड़िया टापू बीच और मुंडा पहाड़ बीच पर जाएँ। यह बाथू बस्ती के माध्यम से पोर्ट ब्लेयर या वांडूर बीच से लगभग 30 किमी की दूरी पर स्थित है। वहाँ सूर्यास्त का आनंद लें।

मुंडा पहाड़ बीच, जो चिड़िया टापू जैविक उद्यान के पास स्थित है, एक लोकप्रिय पर्यटन केंद्र है। यह बीच बहुत कम भीड़भाड़ वाला बीच है और प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग है। कई पर्यटक इस बीच पर न केवल महान नीले समुद्र की ठंडी लहरों का आनंद लेने के लिए बल्कि पक्षियों को देखने के लिए भी आते हैं।

तीसरा दिन:

सुबह-सुबह फेरी के माध्यम से हैवलॉक जाएँ। बच्चों और परिजनों के साथ फेरी के माध्यम से एक द्वीप से दूसरे द्वीप पर जाना ही अपने आप में एक पर्यटन है। पहुँच के होटल में चेक-इन करें, जलपान करें और घूमने निकल जाएँ।

राधानगर बीच

सूर्यास्त का आनंद लेने के लिए राधानगर बीच जाएँ, बीच पर स्नान करें। हैवलॉक द्वीप में स्थित राधानगर बीच अपनी प्राकृतिक सुंदरता, सूर्यास्त और सफेद रेत के लिए प्रसिद्ध है। इसे एशिया के सबसे अच्छे बीचों में से एक के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ 20/- रुपये प्रति व्यक्ति की दर पर कपड़े बदलने की सुविधा उपलब्ध है।

चौथा दिन:

काला पत्थर बीच (सुबह की गतिविधि): सुबह की धूप और प्राकृतिक नजारों का आनंद लेने के लिए काला पत्थर बीच एक आदर्श बीच है।

एलीफेंटा बीच (दिन की गतिविधि): पानी के खेल/ गतिविधियों का आनंद लेने के लिए यह एक आदर्श बीच है। यहाँ आप जेट स्की, स्नोर्कलिंग, स्कूबा, बनाना-राइड, ग्लास बॉटम राइड और अन्य गतिविधियाँ कर सकते हैं।

एलीफेंटा बीच पहुँचने के तरीके- I. राधानगर बीच के रास्ते पर 1.5 किमी की जंगल ट्रैकिंग।

II. गोविंद नगर बीच से नाव की सवारी। किराया 1000/- से 1300/- प्रति व्यक्ति।

पाँचवा दिन:

सुबह-सुबह नील द्वीप पर जाएँ। होटल में चेक-इन, नाश्ता, जलपान आदि करने के बाद बीचों पर घूमने निकल जाएँ।

सीतापुर बीच- नील द्वीप में स्थित सीतापुर बीच अपने सूर्योदय, साफ नीले पानी और मुलायम रेत के लिए प्रसिद्ध है। इसे "सूर्योदय समुद्र तट" के नाम से भी जाना जाता है।

भरतपुर बीच- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के नील द्वीप पर स्थित भरतपुर बीच अपनी सफ़ेद रेत, साफ़ पानी और समुद्री जीवन के लिए मशहूर है। यह जल क्रीड़ा के लिए भी एक लोकप्रिय स्थान है।

लक्ष्मणपुर बीच-I,II: नील द्वीप में स्थित दोनों लक्ष्मणपुर बीच अपने सूर्यास्त, साफ़ पानी और मूंगा चट्टानों के लिए प्रसिद्ध हैं। यह स्नोर्कलिंग और तैराकी के लिए भी एक लोकप्रिय स्थान है। आप अपनी क्षमता के अनुसार इन बीचों को 1 दिन या 2 दिन में कवर कर सकते हैं।

छठा दिन:

सुबह-सुबह फेरी से पोर्ट ब्लेयर वापस जाएँ। होटल चेक-इन, नाश्ता आदि करने के बाद घूमने निकल जाएँ।

रॉस आइलैंड: रॉस द्वीप इतिहास और प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर जगह है। कभी ब्रिटिश राज का प्रशासनिक मुख्यालय रहा यह द्वीप औपनिवेशिक बस्ती और अतीत की उथल-पुथल भरी घटनाओं का गवाह होने के कारण काफ़ी महत्व रखता है। यहाँ आप लगभग 1.5 घंटे बिता सकते हैं।

नॉर्थ बे आइलैंड:

अगर आप हैवलॉक में वाटर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज करना चूक गए हैं, तो आप इन्हें नॉर्थ बे आइलैंड में कर सकते हैं। आप यहाँ लगभग 3.5 घंटे बिता सकते हैं। पोर्ट ब्लेयर और आस-पास के सभी आइलैंड्स का विहगंम नजारा लेने के लिए नॉर्थ बे आइलैंड में स्थित लाइटहाउस अवश्य जाएँ।

रॉस आइलैंड के लिए टिकट 370/- प्रति व्यक्ति और नॉर्थ-बे आइलैंड के लिए टिकट 570/- प्रति व्यक्ति है। जबकि रॉस आइलैंड और नॉर्थ बे आइलैंड दोनों के लिए टिकट 870/- प्रति व्यक्ति के हिसाब से उपलब्ध है।

सातवाँ दिन:

बारातांग और चूना पत्थर की गुफाओं और मैंग्रोव वन की पूरी दिन की यात्रा।

आपको सुबह जल्दी (लगभग 3-4 बजे) शुरू करना होगा और सुबह 6 बजे तक जिरकाटांग नामक जगह पर पहुँचना होगा। जिरकाटांग में प्रवेश निश्चित समय पर उपलब्ध है - सुबह 6 बजे, सुबह 9 बजे, रात 12 बजे और दोपहर 2.30 बजे।

चूना पत्थर की गुफाओं तक पहुँचने के लिए यात्रा लागत (बारातांग तक प्रति व्यक्ति 800 + स्पीड बोट के माध्यम से बारातांग से चूना पत्थर की गुफाओं तक प्रति व्यक्ति 900/-)

वहाँ से चूना पत्थर की गुफाओं तक पहुँचने के लिए 1.5 किमी पैदल चलें। दोपहर 2-3 बजे तक वापस आएँ और दोपहर 4-5 बजे तक पोर्ट ब्लेयर पहुँचें।

अगर आपके पास समय हो तो पोर्ट ब्लेयर में नौसेना समुद्री संग्रहालय समुद्रिका (समुद्री पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं पर जागरूकता पैदा करने के लिए डिज़ाइन किया गया तथा भारतीय नौसेना द्वारा संचालित) जाएँ।

आठवाँ दिन

यदि आपके पास समय की कमी नहीं है तो आप निकोबार द्वीप समूह (अपनी समृद्ध जैव विविधता, पौधों और जानवरों की दुर्लभ और स्थानिक प्रजातियों के लिए प्रसिद्ध), इंदिरा पाइंट (भारत का दक्षिणतम बिंदु) तथा अन्य पर्यटन स्थल जाकर भी घूम सकते हैं।

नवाँ दिन:

अंडमान निकोबार द्वीप समूह की सुनहरी यादों को अपने दिल-दिमाग और कैमरे में समेटने के बाद वापस उड़ान भरें।

वांडूर बीच (पोर्ट ब्लेयर)

राधा नगर बीच

काला पत्थर बीच

रॉस द्वीप

शिक्षा के साथ-साथ जीवन में खेलों का महत्त्व

श्री सुनील कुमार पूणिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

शिक्षा और खेल दोनों ही जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। शिक्षा जहाँ हमें ज्ञान और विचारशीलता प्रदान करती है, वहीं खेल शारीरिक और मानसिक विकास के लिए आवश्यक होते हैं। एक स्वस्थ शरीर और तंदरुस्त मस्तिष्क के लिए खेलों का महत्त्व अत्यधिक है। इन दोनों का संतुलित मेल हमें एक समग्र और सफल जीवन जीने में मदद करता है।

शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार:
खेलों का सबसे महत्त्वपूर्ण लाभ यह है कि वे शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं। नियमित रूप से क्रीड़ा गतिविधियों से शरीर में लचीलापन आता है, हड्डियाँ मजबूत होती हैं और हृदय की सेहत में सुधार होता है। खेलों से शरीर में रक्त संचार बेहतर होता है और यह मोटापे को नियंत्रित करने में मदद करता है। इसके अलावा खेलों में भाग लेने से बच्चों और युवाओं को फिट रहने का आदत पड़ती है, जो जीवनभर उनके स्वास्थ्य को लाभ पहुँचाता है।

मानसिक विकास और एकाग्रता:
खेल न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक विकास में भी मदद करते हैं। जब हम खेल खेलते हैं, तो हमें योजना बनाने, निर्णय लेने और विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता होती है। ये मानसिक क्षमताओं को बेहतर बनाते हैं। इसके अलावा, खेलों में एकाग्रता और धैर्य का भी विकास होता है। खेलों में जीतने और हारने के अनुभव से हमें आत्मविश्वास और संघर्ष की भावना मिलती है, जो जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी मददगार साबित होती है।

सामाजिक कौशल और टीमवर्क:
खेलों में समूह में काम करने की आवश्यकता होती है, जो टीमवर्क और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है। बच्चों को खेलों के माध्यम से यह सीखने का अवसर मिलता है कि कैसे एक टीम के रूप में काम किया जाए और दूसरों के साथ सामंजस्य बनाकर लक्ष्य को प्राप्त किया जाए। साथ ही, खेलों से बच्चों में अनुशासन, नेतृत्व और दूसरों का सम्मान करने की भावना का विकास होता है।

मनोरंजन और तनाव मुक्त जीवन:
आजकल के तनावपूर्ण जीवन में खेलों का बड़ा महत्व है। जब हम खेलते हैं, तो हम अपने दिमाग को एक स्वस्थ और आनंदपूर्ण तरीके से विश्राम देने का अवसर देते हैं। खेलों में भाग लेने से हम मानसिक तनाव और चिंता से राहत पा सकते हैं। यह न केवल बच्चों, बल्कि बड़ों के लिए भी एक बेहतरीन तरीका

है अपने जीवन के तनाव को कम करने का। खेल हमें खुश रहने और मानसिक शांति बनाए रखने में मदद करते हैं।

शिक्षा के साथ खेलों का संतुलन:
शिक्षा और खेलों का संतुलन बनाना अत्यंत आवश्यक है। केवल शिक्षा से जीवन में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती, बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं में संतुलन बनाए रखना भी जरूरी है। यदि बच्चों को खेलों में भी हिस्सा लेने का अवसर मिलता है, तो यह उनकी शिक्षा में भी सुधार करता है। खेलों से सीखने की प्रक्रिया को और अधिक मजेदार और प्रभावी बनाया जा सकता है। इसके अलावा, खेलों के माध्यम से बच्चों को टीमवर्क, नेतृत्व, और कठिनाइयों का सामना करने की क्षमता भी मिलती है, जो उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में भी मदद करती है।

निष्कर्ष:
कुल मिलाकर, शिक्षा और खेल दोनों का जीवन में अत्यधिक महत्व है। जहाँ शिक्षा से हम बौद्धिक और सामाजिक रूप से समृद्ध होते हैं, वहीं खेल शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में सहायक होते हैं। हमें अपने जीवन में इन दोनों को समान महत्त्व देकर एक स्वस्थ, खुशहाल और संतुलित जीवन जीने की दिशा में कदम बढ़ाना चाहिए। बच्चों को यह समझाना जरूरी है कि खेल केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि यह उनके विकास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

"शिक्षा ज्ञान का दीपक है, और खेल जीवन की ऊर्जा — दोनों मिलकर बनाते हैं सम्पूर्ण और सफल व्यक्तित्व।"

प्यारी बिटिया

श्री कमलेश कुमार
स.प्र.अ

अभी तो धरती पर भी नहीं आई थी वह,
फिर माँ की ममता बन गई उसकी छाँव।
अभी तो वजूद था न उसका कहीं,
फिर पिता की दुलारी बन गई वह प्यारी।

अभी तो किलकारी भी नहीं उसने मारी थी,
भाई की प्यारी सहेली बन गई थी।
अभी तक घर के आँगन में
पायल की झंकार नहीं थी उसकी।
फिर दादी की स्नेहिल सहेली बन गई।

अभी तो पहला शब्द भी नहीं बोला था,
फिर दादा जी की लाड़ली, उनकी शान बन गई।
प्यार से नहलायी, प्यार से गुदगुदाया गया,
प्यारी सी बेटी, न जाने कब घर की परी बन गई।

पहला सरकारी काम, यादों का संग्राम

श्री भावेश विजयवर्गीय
लेखापरीक्षक

पहला सरकारी काम, बैंगलोर का धाम,
छोड़ घर पहली बार, नम हुई आँखें अविराम।
याद आती माँ की लोरी, पिता का दुलार,
दोस्तों की महफ़िलें, वो हँसी की बौछार।
दक्षिण की धरती नई, भाषा भी अनजानी,
कन्नड़ के अक्षर जैसे, कोई उलझी कहानी।
ज़रूरत थी सीखने की, हर दिन प्रयास किया,
टूटी-फूटी कन्नड़ में, अपना संदेश दिया।
उनकी टूटी हिंदी भी, कुछ कम न थी प्यारी,
सीखते सिखाते हम, बनती थी यारी।
कभी उनकी गलती सुधारूँ, कभी वो मेरी,
भाषाओं के संगम में, बहती थी प्रीत की लहरी।
बैंगलोर की भाग-दौड़ में, मन थोड़ा उदास हो जाए,
पर नए रिश्तों की गर्माहट, हर गम भुला जाए।
यह पहला सरकारी काम, जीवन का नया मोड़ है,
घर की यादें साथ हैं, दिल में एक अटूट डोर है।

मेहंदीपुर बालाजी

श्रीमती कृतिका शर्मा
अतिथि लेखक

राजस्थान के दौसा ज़िले में स्थित बालाजी धाम के बारे में विवरण

1. मेहंदीपुर बालाजी का पौराणिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण

➤ **पौराणिक मान्यता:**

मेहंदीपुर बालाजी मंदिर भगवान **हनुमान जी** के "बाल रूप" को समर्पित है, इसीलिए उन्हें यहां 'बालाजी' कहा जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह स्थान उन तीन दिव्य शक्तियों – **श्री बालाजी (हनुमान जी)**, **श्री प्रेतराज सरकार**, और **श्री भैरव बाबा** – का केंद्र है। ऐसा माना जाता है कि भगवान बालाजी ने इस स्थान पर स्वयं प्रकट होकर इसे सिद्धपीठ बनाया।

2. मंदिर की विशेषता और आस्था का स्वरूप

➤ **संरचना और वातावरण:**

मंदिर का निर्माण पारंपरिक राजस्थानी शैली में किया गया है, जिसमें पत्थर की दीवारें, संकीर्ण गलियाँ और घण्टियों की गूंज मन को एक विशेष आध्यात्मिक स्थिति में ले जाती है। मंदिर में मुख्य रूप से तीन देवों की मूर्तियाँ विराजमान हैं:

- **बालाजी महाराज (हनुमान जी)**
- **प्रेतराज सरकार (बुरी आत्माओं के न्यायाधीश)**
- **भैरव बाबा (सुरक्षा एवं शक्ति के अधिष्ठाता)**

यहाँ का वातावरण गहन, रहस्यमयी और आस्थापूर्ण होता है। अक्सर आप देखेंगे कि कुछ लोग जोर-जोर से चिल्ला रहे हैं, हँस रहे हैं या बेहोश हो रहे हैं — यह सब बुरी शक्तियों के प्रभाव और उनके निकलने की प्रक्रिया का हिस्सा माना जाता है।

3. आध्यात्मिक उपचार और मानसिक रोगों से मुक्ति

➤ **अनोखी चिकित्सा प्रणाली:**

मेहंदीपुर बालाजी मंदिर भारत के उन गिने-चुने स्थानों में से एक है जहाँ धार्मिक और तांत्रिक पद्धतियों से मानसिक रोगों का उपचार किया जाता है। यहाँ कोई डॉक्टर या मनोचिकित्सक नहीं होता, बल्कि केवल श्रद्धा, मंत्र, और आहुति होती है।

प्रमुख उपचार पद्धतियाँ:

- हनुमान चालीसा और अन्य मंत्रों का जाप
- रोग निवारण हवन और पूजन
- नींबू, मिर्च, राख, हल्दी आदि का प्रयोग

भक्तों को मंदिर की परिक्रमा करनी होती है, हनुमान जी के समक्ष विशेष पूजा करनी होती है और 'प्रेतराज सरकार' के दरबार में प्रार्थना करनी होती है।

4. मुख्य पर्व और धार्मिक आयोजन

➤ **प्रमुख त्योहार:**

1. **हनुमान जयंती** – इस दिन यहाँ विशाल भंडारा और रात्रि जागरण होता है।
2. **अमावस्या और पूर्णिमा** – इन तिथियों को विशेष रूप से प्रभावशाली माना जाता है; इन दिनों मंदिर में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं।
3. **दीपावली और होली** – रोशनी और रंगों के त्योहारों पर भी यहाँ धार्मिक कार्यक्रम होते हैं।
4. **मासिक शनिवार और मंगलवार** – बालाजी के भक्त विशेष रूप से इन दिनों व्रत रखते हैं और मंदिर की यात्रा करते हैं।

त्योहारों पर मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है और यह दृश्य अत्यंत भक्ति-भावनाओं से भरपूर होता है।

5. मंदिर तक कैसे पहुँचे?

➤ **परिवहन की जानकारी:**

- **सड़क मार्ग से**: जयपुर से मेहंदीपुर बालाजी लगभग 70-80 किलोमीटर दूर है। NH-21 से बस या टैक्सी के माध्यम से पहुँचना आसान है।
- **रेल मार्ग से**: बांदीकुई नज़दीकी रेलवे स्टेशन है, जो मंदिर से लगभग 8-10 किमी दूर है।
- **हवाई मार्ग से**: निकटतम हवाई अड्डा जयपुर एयरपोर्ट है।

पर्यटक अपनी यात्रा के दौरान राजस्थान की ग्रामीण संस्कृति, हस्तशिल्प और खानपान का भी अनुभव कर सकते हैं।

6. आसपास के दर्शनीय स्थल

- **दौसा की चांद बावड़ी** – ऐतिहासिक और स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना।
- **भांडारेज किला** – शौर्य और राजस्थान की वीरता का प्रतीक।
- **आभानेरी की चंद्र बावड़ी** – प्रसिद्ध जल संग्रहण प्रणाली।
- **जयपुर** – हवामहल, आमेर किला, सिटी पैलेस, जंतर मंतर आदि।

7. भक्तों के अनुभव और चमत्कार

बहुत से भक्त बताते हैं कि उन्हें ऐसे रोगों से मुक्ति मिली जो वर्षों से ठीक नहीं हो रहे थे, खासकर मानसिक रोग, डर, नींद में खलल, और आत्मिक अशांति। कईयों का मानना है कि बालाजी महाराज की कृपा से उनकी पूरी ज़िंदगी बदल गई।

लोग कहते हैं — "जब सारी चिकित्सा विफल हो जाए, तब बालाजी ही अंतिम आशा हैं"।

फन @ वर्क

(टीम बिल्डिंग एक्टिविटीज एवं ऑफिस इवेंट्स)

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान कार्यालय में प्रशिक्षण के दौरान कई गतिविधियाँ हुई, जैसे कार्यशालाएं, समूह चर्चाएं, और प्रायोगिक सत्र। इनका मकसद था कि प्रतिभागियों को प्रशासनिक प्रक्रियाओं, सूचना का अधिकार कानून, और अन्य विषयों पर अच्छे से समझ और व्यावहारिक अनुभव मिले, ताकि उनकी जानकारी और कौशल बेहतर हो सकें।

प्रशिक्षण अधिकारियों को उनके 6-सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत टीम बिल्डिंग गतिविधियों में भाग लेने के लिए शामिल किया गया। इन गतिविधियों का उद्देश्य उनकी टीमवर्क, संचार और नेतृत्व कौशल को विकसित करना था, जिससे वे कार्यस्थल पर बेहतर समन्वय और सहयोग कर सकें।

इन विशेष गतिविधियों को इस प्रकार तैयार किया गया है कि ये अधिकारियों को सक्रिय और उत्साहित रखें, साथ ही उनके पेशेवर विकास के लिए आवश्यक नवीन कौशल और ज्ञान प्रदान करें, जो उनकी उन्नति में सहायक हों।

प्रशिक्षण अधिकारियों को गायन, कविता पाठ जैसी मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेकर अपनी प्रतिभा दिखाने और माहौल को जीवंत बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

मनोरंजक गतिविधियों के साथ-साथ खेलों को भी समान महत्त्व दिया गया, और प्रशिक्षण अधिकारियों को पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में बैडमिंटन या अपनी पसंद के किसी अन्य खेल में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

शैक्षिक भ्रमण

(शैक्षिक भ्रमण उन प्रशिक्षण अधिकारियों के लिए आयोजित किया जाता है जो अपने पाठ्यक्रम के तहत हमारे कार्यालय में प्रशिक्षण के साथ-साथ जयपुर और आस-पास के विभिन्न विभागों का भ्रमण भी करते हैं। इस भ्रमण का उद्देश्य उन्हें विभिन्न सरकारी विभागों की कार्यप्रणाली और संचालन से परिचित कराना है, जिससे उनका व्यावहारिक ज्ञान बढ़े और वे बेहतर प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें। ऐसे भ्रमण अधिकारियों के लिए सीखने का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा होते हैं, जो उन्हें प्रशासनिक प्रक्रियाओं को समझने और अपने कौशल को विकसित करने में सहायता करते हैं।)

शैक्षिक भ्रमण के दौरान प्रशिक्षण अधिकारियों ने निर्माण प्रक्रिया, उपयोग होने वाली तकनीकों और सामग्री को करीब से देखा, जिससे उन्हें सड़क निर्माण के व्यावहारिक ज्ञान और प्रशासनिक पहलुओं को समझने का अवसर मिला।

अधिकारियों को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय एवं मौसम विभाग का भी भ्रमण करवाया गया, जहाँ उन्होंने संबंधित विभागों के कार्यों एवं गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की।

साथ ही, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के बहिरंग विभाग का भी भ्रमण कराया गया, जहाँ उन्होंने विभाग के प्रमुख कार्यों और गतिविधियों को गहराई से समझने का अवसर प्राप्त किया।

कार्यालय द्वारा कर्मचारियों और कॉलोनी निवासियों के लिए नेत्र जांच शिविर का आयोजन

कार्यालय द्वारा कर्मचारियों और कॉलोनी निवासियों के लिए नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा सभी उपस्थित लोगों की आंखों की जांच की गई और आवश्यक सलाह भी प्रदान की गई। इसका उद्देश्य कर्मचारियों और कॉलोनी निवासियों के बीच नेत्र स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना और समय पर इलाज सुनिश्चित करना था। इस पहल से सभी को अपनी आंखों की देखभाल करने का अवसर मिला, जिससे उनकी दृष्टि स्वस्थ बनी रहे।

आपदा प्रबंधन कार्यक्रम

आपदा प्रबंधन कार्यक्रम का उद्देश्य प्राकृतिक और मानवीय आपदाओं से निपटने के लिए तैयारियों को मजबूत करना है। इस कार्यक्रम के तहत आपदा से बचाव, राहत कार्य और पुनर्निर्माण की योजना बनाई जाती है। कर्मचारियों और समुदाय को आपदा के समय सही कदम उठाने के लिए प्रशिक्षण और जागरूकता दी जाती है। यह पहल सुरक्षा सुनिश्चित करने और हानि को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कार्यालय में अधिकारियों/ कर्मचारियों को सुरक्षा के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में उन्हें सुरक्षा नियमों, आपदा प्रबंधन तकनीकों और आपात स्थिति में सही प्रतिक्रिया देने के तरीकों से अवगत कराया गया। इसका उद्देश्य कर्मचारियों को सुरक्षित कार्यस्थल सुनिश्चित करने और आपातकालीन परिस्थितियों में तत्परता बढ़ाने के लिए तैयार करना था।

विभिन्न कैग (CAG) कार्यालयों से पिछली हिंदी पत्रिका के लिए प्राप्त प्रशंसा पत्र

महा निदेशक, लेखापरीक्षा(केंद्रीय) का कार्यालय, हैदराबाद

शाखा कार्यालय- उप निदेशक / सी आर ए, ओडिशा , भुवनेश्वर

Office of the Director General of Audit (Central), Hyderabad Branch Office: Dy. Director/CRA, Odisha, Bhubaneswar

पत्रांक- हिंदी प्रकोष्ठ/सी.आर.ए./राजभाषा/पत्रिका पावती/2023-24/02/419 दिनांक- /10/2024

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, जयपुर

विषय- कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक की ई-प्रति की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक (ई-प्रति) की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की है।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

9/10/2024

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी प्रकोष्ठ

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

सत्यमेव जयते

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2024-25/191 दिनांक/Dated:23.09.2024

सेवा में

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी,

कार्यालय प्रधान निदेशक,

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,

जयपुर

विषय - विभागीय हिंदी पत्रिका कुरजां के प्रथम अंक का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "कुरजां" की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय और रुचिकर हैं, विशेषकर साहसी नारी, गाँव वाला घर, शिलोंग यात्रा वृतांत, दिल थोड़ा उदास है आदि। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित हैं।

आशा है पत्रिका की गुणवता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंको के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

(हिंदी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा),झारखण्ड, रांची

पत्रांक- रा.भा.अनु./ले.प./पत्रिका/2024-25/134 दिनांक: 22-10-2024

सेवा में,

सुरेन्द्र कुमार जैन
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ)
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान, नागर
जयपुर-302015

विषय - **हिन्दी पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक की ई-प्रति की पावती के प्रेषण।**

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **हिन्दी पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक की ई-पत्रिका** की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ उच्च श्रेणी की हैं। विशेषकर " साहसी नारी " , " गाँव वाला घर " , "सच्चा सुख संसाधनों में नहीं "आत्मिक" साधना में मिलता है " , "गज़ल " आदि रचनाएं अत्यंत ही उच्च श्रेणी की है ।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

राजभाषा अनुभाग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम), मध्य प्रदेश

ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर

क्रमांक/प्रशासन/हिंदी कार्यान्वयन कक्ष/सम्मति/ जावक- दिनांक:28-10-2024

प्रति,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी,

हिंदी प्रकोष्ठ

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,

ए.जी.कॉलोनी, बजाज नगर, जयपुर।

विषय – हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के प्रथम अंक की प्राप्ति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई है । एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है । पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ट है । पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं पठनीय एवं रोचक हैं, जिसके लिए सभी रचनाकारों को साधुवाद । श्रीमती लवली शर्मा द्वारा रचित लेख 'गुन्नू', श्री दीपक सैनी द्वारा रचित लेख 'शिलोंग यात्रा वृतांत', श्री दीपक भारद्वाज द्वारा रचित कविता 'साहसी नारी' एवं श्री अर्पित मिठारवाल द्वारा रचित कविता 'दिल थोड़ा उदास हैं' अत्यंत सराहनीय हैं ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई ।

भवदीय,

SANJEEV KUMAR JHANJI

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

Email **Rajendra Prasad Meena**

Fwd: हिंदी पत्रिका " कुरजां " के प्रथम अंक का प्रशंसा पत्र ।

From : Surendra KumarJain <jainsk.ahd.cca@cag.gov.in> Tue, Nov 05, 2024 10:53 AM
Subject : Fwd: हिंदी पत्रिका " कुरजां " के प्रथम अंक का प्रशंसा पत्र ।
To : Rajendra Prasad Meena <rajendrapm.del.au@cag.gov.in>

From: "RTI Jaipur" <rtijaipur@cag.gov.in>
To: "Surendra KumarJain" <jainsk.ahd.cca@cag.gov.in>
Sent: Monday, November 4, 2024 3:52:54 PM
Subject: Fwd: हिंदी पत्रिका " कुरजां " के प्रथम अंक का प्रशंसा पत्र ।

From: "CHITRA V" <chitrav.tmn.au@cag.gov.in>
To: "RTI Jaipur" <rtijaipur@cag.gov.in>
Sent: Monday, November 4, 2024 3:40:22 PM
Subject: हिंदी पत्रिका " कुरजां " के प्रथम अंक का प्रशंसा पत्र ।

सं.प्र.मले.(लेप-II.)/हि.अ./7-38/ प्रशंसा पत्र /2024-25/54 दिनांक: 04.11.2024.

सेवा में,
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन,
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/हिंदी प्रकोष्ठ
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
ए. जी. कॉलोनी, बजाज नगर,
जयपुर, राजस्थान - 302015.

विषयः हिंदी पत्रिका **" कुरजां " के प्रथम अंक** का प्रशंसा पत्र ।

महोदय,
आपके कार्यालय से प्रकाशित हिंदी पत्रिका **" कुरजां " के प्रथम अंक** की प्रति प्राप्त हुई । सहर्ष धन्यवाद ।
पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं पठनीय एवं रोचक होने के साथ-साथ ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका का मुखपृष्ठ मनमोहक है। श्री. दीपक सैनी का लेख "ओआईओएस मोड्यूलः एक परिचय", श्री परमचन्द गाँधी का लेख "सच्चा सुख संसाधनों में नहीं'आत्मिक' साधना से मिलता है" एवं श्री पी के जैन का लेख "लेखापरीक्षा के दौरान धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के प्रकरणों में ध्यान देने योग्य कुछ जानकारी" बहुत ही सराहनीय हैं । सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल पत्रिका के सफल संपादन हेतु साधुवाद के पात्र हैं । पत्रिका के आगामी अंक के लिए शुभकामनाओं सहित।

भवदीया,

वी.चित्रा
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्र.मले.(लेप.-II),तमिलनाडु & पुदुचेरी
चेन्नई-18

Email **Rajendra Prasad Meena**

Fwd: हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के प्रथम संस्करण की प्राप्ति – के संबंध में।

From : RTI Jaipur <rtijaipur@cag.gov.in> Fri, Sep 20, 2024 11:18 AM
Subject : Fwd: हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के प्रथम संस्करण की प्राप्ति – के संबंध में।
To : Surendra KumarJain <jainsk.ahd.cca@cag.gov.in>
Cc : Rajendra Prasad Meena <rajendrapm.del.au@cag.gov.in>

From: "Hindi Cell PDA C Bengaluru" <hindicellpdc.kar1.au@cag.gov.in>
To: "RTI Jaipur" <rtijaipur@cag.gov.in>
Sent: Friday, September 20, 2024 10:55:43 AM
Subject: हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के प्रथम संस्करण की प्राप्ति – के संबंध में।

महोदय/महोदया,
आपके कार्यालय दवारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'करजां' के प्रथम संस्करण प्राप्ति हुई, जिसके लिए आपको धन्यवाद। पेत्रिका में मौलिक सोच तथा सृजनात्मकता की सुंदर अभिव्यक्ति दृष्टिगत होती है। प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक व उच्च कोटि की हैं। साथ ही, पत्रिका का मुख-पृष्ठ, साज-सज्जा तथा विषयों की प्रस्तुति अत्यंत सुंदर है।
राजभाषा हिंदी की प्रगति में 'करजां' इसी तरह सतत योगदान देती रहे, इसी शुभकामना के साथ समस्त रचनाकारों एवं संपादक मंडल को ढेर सारी बधाइयां एवं शुभकामनाए।

--
धन्यवाद सहित

राजभाषा अनुभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
बेंगलूरु

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of the Principal Director of Audit (Central) Lucknow

पत्रांक सं.:प्र.म.नि.(के.)/प्रशासन/रा.भा.हि./फा.सं 82047/2024-25/I/761081/2024
दिनांक: 10-10-2024

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, जयपुर

विषय:- हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के प्रथम अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में।

आदरणीय महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के प्रथम अंक की ई- प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद | पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है |

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पडा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं "**ओआईओएस मोडयूल : एक परिचय**", "**लेखापरीक्षा के दौरान धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के प्रकरणों में ध्यान देने योग्य कुछ जानकारी**" एवं "**सरकारी लेखापरीक्षक की कहानी**" ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं पठनीय हैं| पत्रिका में समाविष्ट अन्य सभी रचनायें अत्यंत प्रेरक, रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ |

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांकः रा.भा.अ./फाइल सं.-एच-11005-02/2024-25/ दिनांक:05-11-2024

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
जयपुर।

विषय: हिंदी पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक पर अभिमत – संबंधित।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित **हिंदी पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक** की प्रति की प्राप्ति हुई है। आपकी पत्रिका के आकर्षक आवरण पृष्ठ के साथ-साथ इसकी साज-सज्जा सुंदर है और रचनाओं की विषयवस्तु भी प्रशंसनीय है।

"कुरजां" के संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

WAZIR SINGH

हिंदी अधिकारी
(ई-मेल-rajbhasha.raj2.au@cag.gov.in)

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय व्यय (पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग)
मुंबई शाखा,नव भवन,आर के मार्ग,इल्लार्ड इस्टेट,मुंबई
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Director General of Audit, Central Expenditure (Environment and Scientific Departments)
Mumbai Branch, Nav Bhavan, R.K.Marg, Ballard Estate, Mumbai-400 001
Email: bresdmumbai@cag.gov.in
Contact No.: 022- 2082 -3903/ 2146/ 4609, Fax: 022-2263-2414

सत्यमेव जयते

सं.स्था./XIII(14)/विविध पत्रिकाएँ/भाग-III/2024-25/ दिनांक:

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
जयपुर

विषय: हिन्दी पत्रिका 'कुरजां' के प्रथम अंक की ई-प्रति की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके कार्यालय पत्र ईमेल दिनांक: 19.09.2024 को संज्ञान में लें। इस संबंध में आपके कार्यालय से हिन्दी पत्रिका 'कुरजां' के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए यह कार्यालय आपका आभारी है।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। 'गुन्नु', 'दिल थोड़ा उदास है', 'ग़ज़ल', 'गाँव वाला घर' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं रुचिकर हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय ,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

संख्या / No. प्रशा:/हिंदी/अनुभाग/347/हिंपत्रिका /2022/6

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना), दिल्ली
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (INFRASTRUCTURE), DELHI

दिनांक / Dated 21/10/2024

सेवा में,
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक, क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
जयपुर-302015

विषयः विभागीय हिंदी पत्रिका 'कुरंजा' के प्रथम अंक के प्रशंसा पत्र हेतु।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'कुरंजा' की प्राप्ति हुई जिसके लिए आपका सहर्ष साधुवाद। पत्रिका में समाविष्ट समस्त लेख, कविताएँ तथा कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ सराहनीय एवं उत्कृष्ट हैं। पत्रिका का आवरण भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष रूप से बधाई का पात्र है। 'कुरंजा' परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए 'संवाद' परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ।

भवदीया,
21/10/24
हिंदी अधिकारी

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज -

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
211001 20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

पत्रांक- क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2024-25/ दिनांक : 24.09.2024

सेवा में,

वरि. प्रशासनिक अधिकारी
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
जयपुर

विषयः- हिंदी पत्रिका 'कुरंजा' के प्रथम अंक की पावती।

संदर्भः- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 19.09.2024

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'कुरंजा' के प्रथम अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद ।

सर्वप्रथम आपको हिंदी के प्रचार प्रसार में पत्रिका के रूप में एक कड़ी जोड़ने के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। पत्रिका का कलेवर आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर **'गुन्नू', 'साहसी नारी', 'गजल' एवं 'गाँव वाला घर'** विशेष रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों की झलकियां पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रही हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

24.9.24
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II), KERALA, THIRUVANANTHAPURAM – 695 001

सं.लेप.II/हिंदी कक्ष/पत्रिका/2024-25 दिनांक: 01.10.2024

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
ए.जी. कॉलोनी, बजाज नगर, जयपुर

विषय:- पत्रिका की पावती – बाबत्

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''कुरजां'' के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक, मनोरंजक एवं लाभप्रद हैं, विशेषकर, श्रीमती लवली शर्मा द्वारा रचित लेख 'गुन्नु' तथा श्री दीपक भारद्वाज द्वारा रचित कविता 'साहसी नारी' तथा श्री कपिल महला द्वारा रचित कविता 'गाँव वाला घर' अत्यंत सराहनीय हैं । पत्रिका के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाईयाँ ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL), CHENNAI
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालै, चेन्नै – 600 018
Lekha Pariksha Bhavan, 361, ANNA SALAI, CHENNAI – 600 018

सं मनिलेप(के) /हिंदी अनुभाग/14-02/2024-25/122 दिनांक :21.10.2024

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/ हिंदी

क्षेत्रिय क्षमता संस्थान,

ए.जी. कॉलोनी, बजाज नगर,

जयपुर- 302015

विषय : हिंदी पत्रिका "**कुरजां**" के प्रथम अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "**कुरजां**" का प्रथम अंक इस कार्यालय में मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ । धन्यवाद ।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है । पत्रिका की साज-.सज्जा अत्यंत मनमोहक है । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं । सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक है विशेषतः श्रीमती लवली शर्मा कृत "**गुन्नू**", श्री कपिल महला कृत "**गाँव वाला घर**", श्री रामानंद शर्मा कृत "**ग़ज़ल**", श्री दीपक भारद्वाज कृत '"**साहसी नारी**" एवं सुश्री अदिति शर्मा कृत "**हँसीः जीवन की ताकत**" अत्यंत प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Principal Accountant General
(Audit)-II, Maharashtra, Nagpur-440001

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/20/2024-25/जा.क्र.79 दिनांक: 09/10/2024

सेवा में,
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/ हिंदी प्रकोष्ठ
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
ए. जी. कॉलोनी, बजाज नगर, जयपुर-302015

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में |

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं |

क्रं	नाम	रचनाएँ
1.	श्री दीपक सैनी, स.प्र.अ.	ओआईओएस मॉड्यूल : एक परिचय
2.	श्री पी. के. जैन, व.प्र.अ.	लेखापरीक्षा के दौरान धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के प्रकरणों में ध्यान देने योग्य कुछ जानकारी
3.	श्री कपिल महला, व. लेखापरीक्षक	गाँव वाला घर
4.	सुश्री अदिति शर्मा, यंग प्रोफेशनल	हँसी : जीवन की ताकत

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन दिनांकित 09 /10/2024 से जारी)

भवदीया,

महालेखाकार (ले0 एवं ह0) का कार्यालय
बीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार - 800001

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
BIRCHAND PATEL PATH
PATNA, BIHAR - 800001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक/Letter No. हिं.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिभाव/24-25/66
दिनांक/Date :- 22.10.2024

सेवा में,
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/हिंदी प्रकोष्ठ,
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
ए. जी. कॉलोनी, बजाज नगर, जयपुर-302015

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक ई-मेल के द्वारा प्राप्त हुआ है। पत्रिका का यह अंक मुद्रण, सम्पादन एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से सराहनीय है। पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय एवं उत्कृष्ट हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यही हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

सुनील कुमार
हिंदी अधिकारी/हिंदी अनुभाग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

सत्यमेव जयते
SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

क्रमांक- हिं.क./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2024-25/I/773735/2024 दिनांक:24-10-2024

सेवा में

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, जयपुर

विषय:- विभागीय हिंदी पत्रिका ''कुरजां'' के प्रथम अंक की समीक्षा।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "कुरजां" का प्रथम अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं:-

क्र. सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1	श्री अर्पित मिठारवाल	दिल थोड़ा उदास है
2	श्री दीपक सैनी	शीलोंग यात्रा वृतांत
3	श्री दीपक भारद्वाज	साहसी नारी
4	श्रीमती लवली शर्मा	गुन्नू

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

EKTA
(हिंदी अधिकारी)

भारत सरकार/GOVT.OF INDIA

कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर- 751001

O/O THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, BHUBANESWAR-751001

सं-रा.भा.अ./प.प्रति./37/2024-25/231 दिनांक:23.10.2024

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/हिंदी प्रकोष्ठ
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
ए.जी. कॉलोनी, बजाज नगर, जयपुर

विषयः- हिंदी पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र अत्यंत मनमोहक हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ भावपूर्ण, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप से 'गुन्नू', 'साहसी नारी', 'गांव वाला घर', 'हंसी : जीवन की ताकत' आदि रचनाएं रोचक, सारगर्भित एवं प्रशंसनीय हैं। हिंदी भाषा के सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास निश्चित रूप से सराहनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय,

मनोरंजन पाणिग्रही
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.

53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 39 दिनांक 08.10.2024

प्रति,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/ हिन्दी प्रकोष्ठ
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
ए.जी.कॉलोनी, बजाज नगर, जयपुर-302015

विषय : हिन्दी गृह पत्रिका "कुरजां" के प्रथम अंक की पावती बाबत।
संदर्भ : आपके पत्र ई-मेल पत्र दिनांक 19.09.2024

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "कुरजां" के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर ओआईओएस मोडयूल: एक परिचय, साहसी नारी, हँसी: जीवन की ताकत, सच्चा सुख संसाधनों में नहीं 'आत्मिक' साधना से मिलता है, लेखापरीक्षा के दौरान धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के प्रकरणों में ध्यान देने योग जानकारी, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष

कार्यालय: उपनिदेशक,वित्त एवं संचार लेखा परीक्षा कार्यालय, बेंगलूरु

OFFICE OF THE DEPUTY DIRECTOR
FINANCE & COMMUNICATION AUDIT OFFICE, BENGALURU

सं.हिं.क./हिं.पत्रि.पा./2024-25/97 दिनांक: 26.11.2024

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ)
कार्यालय प्रधान निदेशक, क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
जयपुर - 302015

विषय – विभागीय हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के प्रथम अंक की पावती।

संदर्भ – ई-मेल पत्र दिनांकित 20/09/2024

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित विभागीय हिंदी पत्रिका 'कुरजां' के प्रथम अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। श्रीमती लवली शर्मा का लेख 'गुन्नू', श्री दीपक सैनी का लेख 'ओआईओएस मोडयूल: एक परिचय', श्री अर्पित मिठारवाल की कविता 'दिल थोड़ा उदास है', सुश्री अदिति शर्मा की कविता 'हँसी: जीवन की ताकत', तथा श्री पी.के. जैन का लेख 'लेखापरीक्षा के दौरान धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के प्रकरणों में ध्यान देने योग्य कुछ जानकारी' आदि रचनाएँ सराहनीय हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

सधन्यवाद !

भवदीया,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली- 110001
NORTHERN RAILWAY, BARODA HOUSE, NEW DELHI – 110001

सं. हिन्दी /17-18/2015/पत्रिका-I दिनांक:

सेवा में ,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
बजाज नगर, जयपुर- 302015
राजस्थान

विषय:- हिन्दी पत्रिका 'कुरजां' के प्रथम अंक की प्राप्ति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक गृह पत्रिका **'कुरजां'** के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण व पृष्ठ सज्जा अत्यंत आकर्षक व सुंदर है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ पठनीय व ज्ञानवर्धक है। **गन्नु, दिल थोड़ा उदास है, साहसी नारी, गाँव वाला घर** विशेष रूप से उल्लेखनीय व रोचक रचनाएँ है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीया

-ह-
हिन्दी अधिकारी

'कुरजां' के इस अंक को पढ़ने के लिए आपका हृदय से धन्यवाद। इस अंक के माध्यम से हमने ज्ञान, सोच और प्रेरणा की यात्रा की है। हम आपके सुझावों और योगदानों के इंतजार में रहेंगे ताकि आने वाले अंकों को और भी बेहतर बनाया जा सके।

इस अंक के निर्माण में योगदान देने वाले सभी लेखकों, संपादकों और सहयोगियों का हार्दिक आभार। आपकी मेहनत और समर्थन के बिना यह संभव नहीं होता। हमारे साथ जुड़े रहें और अपनी राय, लेख, कविता या चित्र हमारे अगले अंक के लिए भेजें। इस पत्रिका को अपने मित्रों और परिवार के साथ जरूर साझा करें।

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, जयपुर
REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE, JAIPUR